BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

भारतीय जैन संघटना समाचार

मार्च–अप्रैल 2016
वर्ष 1 अंक 4

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से....2

मंथन.....३

शैक्षिक क्षेत्र में
भारतीय जैन संघटना.....4

बीजेएस गतिविधियाँ.....5

प्रतिभाएँ-
जो हमारी प्रेरणास्त्रोत हैं.....6

अल्पसंख्यक सूचनाएँ,
जानकारी एवं समाचार.....7

बीजेएस आगामी कार्यक्रम एवं
गतिविधियाँ.....8

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

प्रिय आत्मजन,

श्री महावीर जयंती की आप सभी को शुभकामनाएँ . भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सत्य, अहिंसा एवं अपरिग्रह के सिद्धांतो पर हम स्वयं चले व अन्य को प्रेरित करें, जो हिंसा मुक्त विश्व के निर्माण हेतु आवश्यक है. मुझे सहर्ष सूचित करना है कि ***'भारतीय जैन संघटना समाचार'*** ई-मेल माध्यम के अतिरिक्त, प्रकाशित स्वरूप में अगले माह से 20,000 परिवारों को प्रति माह प्रेषित होगा. हमारा उद्देश्य विचारणीय एवं चिंतनशील मुद्दों पर आपसे संवाद स्थापित करना व आपके अभिप्रायों से अवगत होना है.

"दुनिया को बदल डालो" यह वाक्य प्रायः हमारे कानों से टकराता है. परिवर्तनों से गतिमान समय में परिस्थितियों व आवश्यकतानुरूप स्वयं को ढाल लेना ही दुनिया को बदलने के समान है, जिस हेतु हमारा शिक्षित होना अनिवार्य है. महान राजनीतिज्ञ एवं अहिंसा के पुजारी स्व॰ श्री नेल्सन मंडेला ने कहा था कि **"दुनिया को बदलने हेतु शिक्षा ही कारगर शस्त्र है"**. शिक्षा से अभिप्राय मात्र डिग्रीयाँ प्राप्त कर लेना या मात्र साक्षरता ही नहीं है अपितु समय की मांग के अनुरूप ज्ञान- विज्ञान एवं बुद्धि कौशल्य के साथ उन क्षमताओं की प्राप्ति है, जिससे समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चला जा सके.

स्वतन्त्रता प्राप्ति के 69 वर्षों की लंबी यात्रा पूर्ण कर लेने के पश्चात भी विकसित देशों की श्रेणी में आने हेतु हम कोसों दूर हैं। शत -प्रतिशत शिक्षितता तो बहुत दूर की बात है, देश में साक्षरता मात्र 74.04% है, जिसके लिए क्षेत्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व आर्थिक विविधताएँ कारणभूत हैं. निश्चित तौर पर हम अनेक समस्याओं से घिरे हैं जिनका व्यावहारिक अभिगमों से सामना करने की आवश्यकता है.

मित्रों! यह अंक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व आधुनिक शिक्षण संस्थानों की आवश्यकता पूर्ति विषय पर है, क्योंकि भावी पीढ़ी को तराशना, हम सभी का उत्तरदायित्व है. शैक्षिक संस्थाओं के पूर्णोद्धार व आधुनिक शैक्षिक मंदिरों की स्थापना से ही इस उत्तरदायित्व का निर्वहन संभव है. देश स्थित जैन समाज, शिक्षा के क्षेत्र में परोपकार व सेवाभावना से सदैव अग्रणी रहा है. किन्तु शिक्षण क्षेत्र के व्यवसायीकरण व शिक्षा में प्रतिदिन प्रचलित हो रही नवीन पद्धतियों से अब यह लगभग तय हो चुका है कि दान - धर्म व शिक्षा के पंथ विभाजित हो चुके हैं व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही एक मात्र समाधान है जिसे सीमाओं से परे आंदोलन का स्वरूप देने की आवश्यकता है.

इस अंक के ***'प्रतिभाएँ-जो हमारे प्रेरणा के स्त्रोत हैं'*** कॉलम में युवा प्रतिभा के स्थान पर एक संस्था 'विज्ञान आश्रम' से आपका परिचय करवा रहे हैं. यह संस्था पुणे (महाराष्ट्र) के समीप पाबल गाँव में स्थित है जो कौशल विकास हेतु आधारभूत प्रशिक्षण देने वाले अद्वितीय विद्यालय का नमूना है. संस्था के संस्थापक स्व॰डा॰श्रीनाथ कालबाग ने अधूरे विद्यालयी शिक्षण प्राप्त उन विद्यार्थियों को लागत प्रभावी तकनीक (Cost Effective Technique) से कौशल्य विकास आधार पर विकल्पों एवं समाधानों संबंधी शिक्षण प्रदान कर, उनका जीवन उन्नत व प्रकाशित किया है व उनकी संस्था इस पुनीत कार्य को सफल अंजाम देते हुए उनके स्वप्नों को परिपूर्ण कर रही है.

प्रफुल्ल पारख

राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे

कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुवाँ जैन, अहमदाबाद

सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई सुरेश कोठारी, अहमदाबाद सुदर्शन जैन, बड़नेरा, वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया, संजय सिंघी, रायपुर, राजेंद्र लुंकड़, इरोड़

मंथन

गुणवत्तायुक्त शिक्षा व शैक्षिक संस्थाओं की आवश्यकता

बच्चों को शिक्षित करना प्रत्येक अभिभावक का प्राथमिक किन्तु महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है. परिवर्तनशील युग में शिक्षा जहां नित नए स्वरूप में परिभाषित हो रही है, अभिभावक भी उनकी मेहनत व पसीने की कमाई को उनकी संतानों की शिक्षा पर खर्च कर अब श्रेष्ठ शिक्षण व्यवस्था सुनिश्चित कर रहे हैं, क्योंकि यह पूंजी निवेश उस वृक्ष के बीजारोपण समान है जो कुछ वर्षों में फल देने वाला है. शिक्षा के क्षेत्र में पूंजी निवेश का अभिप्राय अभिभावकों द्वारा उनकी संतानों की श्रेष्ठ विद्यालयों में शिक्षण पर खर्च करने से भी है और साथ ही गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संस्थानों के कुछ व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा विद्यालयों के निर्माण से भी है जो परिवर्तनशील युग में समाज की प्राथमिक किन्तु महत्वपूर्ण मांग है. दोनों ही दृष्टिकोणों के मद्देनजर शिक्षण के क्षेत्र में पूंजी निवेश अब अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि आज के बालक/बालिकाएँ आने वाले कल के भाग्य विधाता हैं.

प्राचीन काल से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभिप्राय मनुष्य की संस्कृतिगत उत्कृष्ट जीवन शैली प्राप्ति हेतु संवेदनशीलता में वृद्धि व बोधात्मक विकास से रहा है. वर्तमान युग में नवीन विचारधाराओं के तहत भी शिक्षा का अर्थ बालक/बालिकाओं के सम्पूर्ण विकास से है किन्तु यह चिंतन एवं मंथन का विषय है कि परंपरागत एवं प्रणालीगत तरीकों से संचालित शैक्षिक संस्थाओं में प्रदान किया जा रहा शिक्षण, क्या समय की मांग के अनुरूप सम्पूर्ण एवं परिणामलक्षी है?

जैन समाज हेतु यह गर्व का विषय रहा कि परोपकार व सेवा की भावना से वह शिक्षण जगत को उन्नत कर समाज व देश निर्माण में रचनात्मक भूमिका अदा करता रहा है. स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व से लेकर अब तक अनेक राज्यों में जैन समाज द्वारा शैक्षिक संस्थाओं का संचालन वृहद स्तर पर हो रहा है, फलस्वरूप वह सदियों से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है. किन्तु इस अग्रगण्य स्थिति पर बने रहने हेतु परोपकार की प्रणालिका से कुछ हटकर अब गुणवत्तापूर्ण प्रीमियर शिक्षण संस्थाओं की स्थापना व उनके कुशल संचालन से बदलती सामाजिक शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए राष्ट्र निर्माण में सहभागिता आवश्यक है. हमारी भावी पीढ़ियों को संवेदनशील व विवेकपूर्ण बनाने के आशय से उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का उत्तरदायित्व हमें अब स्वीकारना ही होगा. यदि ऐसा कर सके तो युवाओं के इस देश भारत में शत-प्रतिशत शिक्षा से हम आने वाले दशकों में जनसांख्यिक लाभांश की लहलहाती फसलें काटते रहेंगे.

2011 की राष्ट्रीय जनसंख्या जनगणना के ऑकड़ों के अनुसार देश स्थित जैन समाज में साक्षरता की दर 94.1% है जबकि राष्ट्रस्तरीय साक्षरता की दर मात्र 74.04% है. साक्षरता दर को शत-प्रतिशत तक ले जाने हेतु गंभीर प्रयासों की आवश्यकता है. सामाजिक उद्यमियों द्वारा इस क्षेत्र में प्रवेश कर उपलब्ध अवसरों का उपयोग समाज व देश निर्माण में हितावत है. साथ ही बदलती हुई परिस्थितियों में, अभिभावकों की उनकी संतानों की शिक्षा के संदर्भ में अब सामान्यतः विकसित हो रही उत्कृष्ट शैक्षिक वैचारिकी के अतिरिक्त, सरकारी नीतियों व नियमों में बदलाव भी उस माहौल के निर्माण में सहायक होकर हमें प्रोत्साहित कर रहा है कि गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना व संचालन हेतु कृतसंकल्पित हों, ताकि हम अग्रिम पंक्ति में हमारा स्थान बनाए रख सकें.

इसके अतिरिक्त अल्पसंख्यक समुदायों की शैक्षिक संस्थाओं के स्वतंत्र प्रशासन के लाभ व अवसंरचना (Infrastructure) के विकास हेतु अनेक सरकारी योजनाएँ अमल में हैं. भारत सरकार के 'मेक इन इण्डिया', 'स्टार्टअप एण्ड डिजिटल इण्डिया' जैसी परियोजनाओं के माध्यम से मानव के त्रि-स्तरीय कौशल (क) अनुसंधान व ज्ञान (ख) व्यावसायिक व सेवाकीय सुदृढ़ता एवं (ग) कौशल्य कार्मिकता विकास के सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं.

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (National Skill Development Corporation) की रिपोर्ट अनुसार वर्ष 2022 तक मात्र महाराष्ट्र राज्य में 1.5 करोड़ कौशल्य प्रशिक्षण युक्त मानव संसाधनों की आवश्यकता होगी. जैन समाज को शिक्षा के बदले स्वरूप व व्यावहारिक व्यावसायिक ज्ञान आधारित शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना की आवश्यकता को समझते हुए योग्य निर्णय लेना चाहिए.

परंपरागत शैक्षिक संस्थाओं के पूर्णोद्धार की वैचारिकी व उस पर कार्यरत होना आज के समय की समाज व देश हित तथा भावी पीढ़ियों के शैक्षिक सशक्तिकरण हेतु महत्वपूर्ण आवश्यकता है. आईये, हम सामूहिक रूप से रचनात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए समाज व देश को आदर्श व नवस्वरूप प्रदान करने हेतु कृतसंकल्पित हों.

शैक्षिक क्षेत्र में भारतीय जैन संघटना

भारतीय जैन संघटना शैक्षिक क्षेत्र में वर्ष 1993 से कार्यरत है, जब लातूर (महाराष्ट्र) के भूकंप में अनाथ हुए बच्चों के सामाजिक उत्तरदायित्वों के परिप्रेक्ष्य में उनके शैक्षणिक पुनर्वसन को स्वैच्छिक तौर पर स्वीकार किया. इस शैक्षणिक पुनर्वसन में बड़ी संख्या में बच्चों को पुणे (महाराष्ट्र) लाया गया. इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदाग्रस्त क्षेत्रों में विद्यालय अवसंरचना (Infrastructure) का निर्माण किया गया। वर्ष 2001 में कच्छ (गुजरात) में आए भूकंप के पश्चात 1.20 लाख विद्यार्थियों हेतु 368 विद्यालयों का निर्माण, त्सुनामी प्रभावित अंडमान निकोबार द्वीप समूह में 11 विद्यालयों का निर्माण 2005 में किया गया. वर्ष 1997 में संस्था के पुणे स्थित वाघोली शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र को नवस्वरूप प्रदान किया गया जिसमें अब तक हजारों भूकंप प्रभावित तथा आदिवासी बच्चों के शैक्षिक व जीवन-यापन की व्यवस्थाएँ जुटाई गई हैं.

समय के साथ बदलते परिवेशों में, हमने मूल्यवर्धित शिक्षा के महत्व को समझा जो देश की ही नहीं अपितु समस्त विश्व की नई व युवा पीढ़ी को सशक्त करने हेतु आवश्यक है. हमें स्पष्टरूप से यह भी अनुभव हुआ कि सरकार के लिए गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक प्रबंधों के प्रयास व उनका प्रशासन अत्यंत ही दुष्कर कार्य है, अतः हमने स्वैच्छिक तौर पर उस अभियान की नींव रखी जिसमें वृहद - स्तरीय प्रतिकृति समान हस्तक्षेप (Replicable Interventions) संभव हो, जिनमें से कुछ निम्न हैं:

EDQUIP
(Educational Quality Improvement Program)

इस गुलदस्ते में, विभिन्न लाभार्थियों जैसे प्रबन्धकों, शिक्षकगण, विद्यार्थियों हेतु विविध कार्यक्रम हैं, जिनमें प्रमुख हैं (1) विद्यालय मूल्यांकन एवं प्रमाणन (School Assessment & Accreditation), (2) शिक्षकों की प्रभाविता मापन (Measurement of Teachers Effectiveness), (3) मूल्यवर्धन शिक्षण (Value Education). ये सभी गहन अनुसंधान आधारित निर्मित किये गए कार्यक्रम हैं जो जैन समाज द्वारा संचालित विद्यालयों में पहुँच चुके है क्योंकि इन कार्यक्रमों के प्रायोगिक क्रियान्वयन हेतु इन विद्यालयों ने संस्था को तैयार मंच प्रदान किये.

FJEI
(Federation of Jain Educational Institutes)

भा.जै.स. ने इस संस्था का गठन वर्ष 2002 में किया जिसका उद्देश्य, देश स्थित जैन समाज की समस्त शैक्षिक संस्थाओं को एक मंच पर लाकर उनमें प्रदान किया जा रहे शिक्षण कार्य की गुणवत्ता को व्यापक एव श्रेष्ठ बनाना है. FJEI की सदस्य संस्थाओं को अविरतरूप से मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान की जाती है. शिक्षा के क्षेत्र में आ रहे द्रुत परिवर्तनों से उन्हें माहितगार करने हेतु जागृति अभियान भी चलाया जाता है.

SAP
(Student Assessment Program)

यह बहुआयामी परीक्षण कार्यक्रम है जो कक्षा 4 के विद्यार्थियों हेतु विषेशरूप से निर्मित किया गया है. इसमें विद्यार्थी के भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक व बौद्धिक स्तर को मापा जाता है. माता-पिता द्वारा उनकी संतानों की नैसर्गिक क्षमताओं का परीक्षण व मूल्यांकन उनके स्तर पर करना सामान्यतः कठिन होता है. विद्यार्थी की अभिक्षमताओं (aptitude) एवं संभावित बुद्धिवैभव (potential talent) को समझना व स्वीकारना, उनकी स्वयं की संतानों के योग्य शैक्षिक पथ के निर्धारण हेतु आज के समय की नितांत एवं महत्वपूर्ण आवश्यकता है. देश के नन्हें-मुन्नों की नैसर्गिक क्षमताओं से अभिभावकों को माहितगार कराने का यह कार्यक्रम अनेक राज्यों के सरकारी व निजी विद्यालयों के माध्यम से क्रियान्वयित है.

युवती सक्षमीकरण
(Empowerment of Girls)

तीव्र गति से समाज व देश के सामाजिक परिवेश में आ रहे परिवर्तनों के कारण बेटियों के समक्ष 21वीं शताब्दी की सामाजिक चुनौतियों का सफलता से सामना करने हेतु उन्हें सक्षम बनाने का यह शैक्षिक सामाजिक प्रशिक्षण कार्यक्रम 2008 में निर्मित किया गया. अब तक 23,000 से अधिक युवतियों का सक्षमीकरण हुआ है. तीन दिवसीय इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में माता - पिता व शिक्षकगण से निश्चित तौर पर प्राप्त होने वाले सकारात्मक अभिगम के उपरांत, प्रतिभागी युवतियों में प्रबल स्पंदन शक्ति (Emotional Strength) जागृत होती है जिससे वे सही व गलत को ठीक से समझने में दक्षता प्राप्त करती हैं, जो उनके जीवन का मोड़ बिन्दु (Turning Point) बन जाता है. स्व-अनुशासित, चारित्रिक वैचारिकी के साथ आत्म-सम्मानयुक्त जीवन यापन के पाठ पढ़ाता यह कार्यक्रम, आदर्श युवा पीढ़ी की संकल्पना को यथार्थ में बदलने का रचनात्मक प्रयास है.

अल्पसंख्यक लाभ जनजागृति अभियान
(Minority Benefits Awareness Mission)

भारत सरकार द्वारा जनवरी, 2014 में जैन समाज को धार्मिक अल्पसंख्यक अधिसूचित किया गया. इससे पूर्व देश के 14 राज्यों ने पूर्व में ही उनके राज्य में जैन समाज को अल्पसंख्यक दर्जा प्रदान किया हुआ था. अल्पसंख्यकता का अर्थ, परिभाषा, संवैधानिक प्रावधानों व अधिकारों से जैन समाज के प्रत्येक सदस्य को अवगत कराने व केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा लाभ की विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्रत्येक परिवार तक पहुँचाने के उद्देश्य से "अल्पसंख्यक लाभ जन-जागृति अभियान" का शुभारंभ मार्च, 2014 में किया गया. समाज के ही प्रशिक्षित किए गए प्रशिक्षकों के माध्यम से सम्पूर्ण देश में कार्यशालाओं के आयोजन से यह जन-जागृति अभियान संचालित है. इसके अतिरिक्त योजनाओं व लाभों की जानकारी पुस्तक प्रकाशन के माध्यम से घर-घर तक पहुँचाने हेतु हम कृत-संकल्पित हैं.

हमें यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो. हम शैक्षिक संस्थाओं द्वारा आधुनिक, उपयुक्त एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था FJEI के माध्यम से करने हेतु भी कृतसंकल्पित हैं. हमारा उद्देश्य इन सभी प्रयासों से संगठित व सशक्त जैन समाज के निर्माण के साथ शिक्षा व भावी पीढ़ी के सक्षमीकरण से सम्पूर्ण सामाजिक विकास सुनिश्चित करना है.

भारतीय जैन संघटना समाज व समाज की समस्याओं पर लक्ष्य करने व उनके सहायतार्थ खड़े होने हेतु वृहद स्तरीय योग्य वातावरण के निर्माण में प्रयासरत है. समाज के विशाल फ़लक पर जरूरतमंदों हेतु हजारों हजारों BJS कार्यकर्ताओं द्वारा सहायता का हाथ बढ़ाना, निश्चित ही जैन धर्म की सच्ची आराधना है जो सत्य, अहिंसा एवं अनेकांत से स्तंभित है.

बीजेएस गतिविधियाँ

मेट्रीमोनियल गेट टू - गैदर का हुआ भव्य आयोजन इंदौर में

भारतीय जैन संघटना के संस्थापक श्री शांतिलालजी मुथ्था द्वारा प्रस्तुत वैवाहिक रिश्ते तय करने की नवीन पद्धति में शिक्षित युवक/युवतियों को जीवन साथी चुनने में अभिभावकों को उनकी संतानों को प्राथमिक उत्तरदायित्व प्रदान करने की अनुशंसा की गई है. इस अभिगम को समाज द्वारा अभूतपूर्व प्रतिसाद प्राप्त हो रहा है. दिनांक 20 मार्च, 16 को इंदौर की सयाजी होटल में BJS इंदौर द्वारा इस नवीन अभिगम पर आयोजित मेट्रीमोनियल गेट टू गैदर में 200 से अधिक युवक/युवतियों ने भाग लिया. दिन भर चली विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागी युवक/युवतियों को भावी जीवन साथी के चयन हेतु वैचारिक व अन्य अनुकूलताएं जाँचने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हुआ जो उनके सफल दाम्पत्य जीवन हेतु बदलते सामाजिक परिवेश में अनिवार्य है. इस आयोजन की परिणामलक्षी भव्य सफलता के मद्देनजर समाजजन की मांग पर इंदौर में द्वितीय मेट्रीमोनियल मीट का आयोजन 17 जुलाई, 2016 को करने का निर्णय लिया गया.

राजभवन व मुख्यमंत्री निवास पहुंचे आत्महत्याग्रस्त किसान परिवारों के बच्चे

आत्महत्याग्रस्त किसान परिवारों के बच्चे जो शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र, वाघोली, पुणे मे अध्ययनरत हैं, उनमें से 250 बच्चों ने दिनांक २१ फ़रवरी १६ को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री निवास स्थान पर श्रीमती अमृता फड़नवीस से शुभेच्छा भेंट की. श्रीमती फड़नवीस ने इन बच्चों का स्वागत किया व उनकी पारिवारिक समस्याओं पर चर्चा की तथा भारतीय जैन संघटना संचालित शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र, वाघोली, पुणे के बारे मे विस्तार से जानकारी प्राप्त की. इसी दिन महाराष्ट्र के राजभवन मे राज्यपाल श्री के. विद्यासागर राव के साथ भी इन बच्चों ने शुभेच्छा मुलाक़ात ली. जनवरी माह में राज्यपाल महोदय ने इन बच्चों से पुणे में भेंट की थी व मुंबई आने का निमंत्रण भी दिया था.

इन बच्चों के पुणे आने के बाद कुछ ही माह में उनमें विकसित हुए सकारात्मक दृष्टिकोण व आत्मविश्वास की झलक देखने को मिली. प्रत्येक बालक कुछ कहना चाहता था व कुछ प्रस्तुत करना चाहता था जो उनमें आए परिवर्तनों का द्योतक है.

BJS महाराष्ट्र पदाधिकारियों की नासिक सभा मे लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

13 मार्च, 2016 को BJS नासिक द्वारा आयोजित इस सभा मे सम्पूर्ण महाराष्ट्र से BJS के उपस्थित 140 पदाधिकारियो में राज्याध्यक्ष पारस ओसवाल, सभी क्षेत्रीय एवं जिल्हा अध्यक्ष तथा सचिव, राज्य हेतु नवघोषित राज्याध्यक्ष श्री अमर गांधी, प्रभारी श्री हस्तीमल बम्ब, BJS राष्ट्रीय कार्यकारिणी में महाराष्ट्र के सदस्यों सहित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख उपस्थित रहे. श्री पारख ने समाज की परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप समस्याओं से निपटने हेतु तन, मन, धन से कार्य करने हेतु पदाधिकारियों को प्रोत्साहित किया. वर्ष 2016 के राज्य वार्षिक कैलेंडर पर चर्चा व निर्धारित लक्ष्यों पर कार्य करने संबंधी विषय पर गंभीर चर्चा विचारणा व निर्णय लिए गए. आत्महत्याग्रस्त किसान परिवारों के सर्वेक्षण हेतु टीमों के गठन एवं कार्य संबंधी योजना का निर्माण भी किया गया.

समाज में बढ़ती तलाक की समस्या पर व्याख्यान

दक्षिण भारत 48 पट्टी पोरवाल महासंघ के श्रवणबेलगोला, कर्नाटक में आयोजित सम्मेलन में भारतीय जैन संघटना के महामंत्री श्री महेश कोठारी ने मुख्य वक्ता के रूप में समाज में वर्ष दर वर्ष बढ़ रही तलाक की दर व उसके कारणों व निवारणों पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया. विवाह एवं परिवार जैसी संस्थाओं की बदलती परिभाषा एवं कार्यक्षेत्र, हमारे समक्ष अनेक चुनौतियाँ खड़े कर रहे हैं. इस विषय पर समाजजन को जागृत व प्रशिक्षित करने का यह रचनात्मक प्रयास था.

स्टार्टअप कोनक्लेव 2016 के आयोजन से व्यावसायिक सक्षमीकरण अभियान को मिले नए पंख

8 मार्च, 2016 को ऊंटी मे भारतीय जैन संघटना के मंत्री श्री राजेंद्र लूंकड़ के निर्देशन में स्टार्टअप कोनक्लेव का आयोजन हुआ. कुछ माह पूर्व ऊंटी मे ही आयोजित हुई B2B कार्यशाला से परिणाम प्राप्ति के उद्देश्य से इसके सभी प्रतिभागियों को व्यावसायिक नवीन विचारों (Ideas)को लिखित में प्रस्तुत करने हेतु प्रार्थना के साथ सूचित किया गया कि साध्य (viable & Feasible) विचारों की योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु BJS तमिलनाडू द्वारा वितीय व्यवस्थाएँ बनाने हेतु प्रयास किए जाएँगे. कुल प्राप्त हुए 40 विचारों (Ideas) में से 15 का चयन कर इस स्टार्टअप कोनक्लेव में उन्हें पावर पॉइंट प्रस्तुति हेतु आमंत्रित किया गया. इस कार्यक्रम मे युवा उद्यमियों द्वारा व्यवसाय के विविध क्षेत्र संबंधी नवीन व्यवसायों के विचारों/प्रस्तावों की प्रस्तुति से रचनात्मक कार्ययोजनाओं की स्थापना हेतु सशक्त मंच का निर्माण भारतीय जैन संघटना के व्यावसायिक सक्षमीकरण अभियान के अंतर्गत हुआ है.

प्रतिभाएँ - जो हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं

इनसे मिलिए:

सुश्री मालतीबेन मेहता –

राज्याध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना गुजरात

अहमदाबाद (गुजरात) निवासी सुश्री मालतीबेन मेहता, मीडिया व्यवसायी एवं शिक्षा शास्त्री होने के साथ उच्च शिक्षित वर्ग की प्रतिनिधि हैं. आपने (1) Political Science (2) Development of Communication एवं(3) Mass Media मे Masters डिग्रीयाँ अर्जित की हैं. आप देश की मात्र ऐसी प्रत्याशी हैं जिन्होनें वर्ष 1988 में Foreign & Commonwealth Fellowship उच्च अध्ययन हेतु प्राप्त कर, इंग्लैंड में Mass Media एवं Communication & Journalism में Masters की डिग्री मेंचेस्टर विश्वविद्यालय से प्राप्त की.

प्रतिभाओं से युक्त शैक्षणिक योग्यताओं के बल पर 1984 से 2012 तक आपने गुजरात विश्वविध्यालय अहमदाबाद के Educational Multimedia Research Centre के Producer पद पर सेवाएँ प्रदान की. इस दौरान आपने 300 से अधिक Educational Television Films का निर्माण किया व राष्ट्र स्तरीय ख्याति अर्जित की। गुजरात विश्वविद्यालय ने वर्ष 1995-2010 के दौरान उसके प्रतिष्ठित "Indo-Japan Student Exchance Program" का आपको समन्वयक नियुक्त किया. आप Media Women's Forum, गुजरात की संस्थापक सदस्य, Network of Women in India की क्षेत्रीय समन्वयक, Association of British Scholars in Ahmedabad की भूतपूर्व अध्यक्षा तथा Indo-Japan Friendship Association की अध्यक्षा हैं.

प्रकृति से सदैव विद्यार्थी, पारिवारिक संस्कृति की पक्षधर, सहृदय मित्र समान मालतीबेन मेहता सही अर्थों मे जैन धर्म का पालन करते हुए महिला सशक्तिकरण व सुखी परिवार एवं सहअस्तित्व हेतु उनकी योग्यताओं एवं अनुभवों से समाज को रचनात्मक अंशदान देने हेतु कृतसंकल्पित है.

हमे इन पर गर्व है:

डॉ. डी. सी. जैन, जबलपुर

आपका जन्म जनवरी 1933 में जबलपुर के धार्मिक परिवार में हुआ. इंजीनियर दयाचन्द के नाम से जबलपुर में प्रख्यात डॉ. डी. सी. जैन, भारतीय जैन संघटना से वर्ष 2002 में आदरणीय शांतिलालजी मुथ्था की जबलपुर यात्रा के दौरान जुड़े. आपने शिक्षा के क्षेत्र में समाज व देश को अद्वितीय सेवाएँ प्रदान की हैं.

वर्ष 2002 में आपने जबलपुर में ज्ञान गंगा इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल प्रारम्भ किया। वर्ष 2003 में जबलपुर में ही ज्ञान गंगा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी एवं साईन्स व 2006 में ज्ञान गंगा कॉलेज ऑफ टेक्नोलोजी तथा MBA व MCA कॉलेज की स्थापना की. मध्यप्रदेश ही नहीं सम्पूर्ण देश में इस संस्थान की गणना प्रीमियर शिक्षण संस्थानों में होती है। वर्ष 2002 से भारतीय जैन संघटना की संघटक संस्था 'Federation of Jain Educational Institutes' की गतिविधियों का शुभारंभ ही नहीं किया अपितु व्यापकता भी प्रदान की.

वर्ष 2012 मे आप भारतीय जैन संघटना की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य चयनित हुए. आपने मध्यप्रदेश मे जैन समुदाय द्वारा संचालित शैक्षिक संस्थाओं के ट्रस्टियों का सम्मेलन FJEI के अंतर्गत आयोजित कर जैन समाज को संगठित करने का अनुपम कार्य किया. आपने मध्यप्रदेश बुंदेलखंड व महकौशल विभागों मे भारतीय जैन संघटना के युवती सक्षमीकरण कार्यक्रमों का श्रृंखलाबद्ध आयोजन कर समाज मे चेतना व जागृति लाने का कार्य किया.

जबलपुर के लब्ध प्रतिष्ठित महानुभाव श्री डी.सी.जैन कुशल सामाजिक नेतृत्वकार, आदर्श एवं सिद्धांतवादी व्यक्तित्व के धनी हैं। सामाजिक सम्बन्धों की अहमियत को समझने वाले श्री जैन समय-समय पर अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किए गए हैं.

सफलतम प्रतिभा : तपोवन की प्रतिकृति समान 'विज्ञान आश्रम' के प्रणेता

स्व. डॉ. श्रीनाथ कालबाग

मुंबई में जन्में डॉ. श्रीनाथ कालबाग की बचपन से विज्ञान में गहरी रूचि रही. मुंबई के रॉयल इंस्टिट्यूट से B.Sc करने के पश्चात वर्ष 1953 में उच्च अध्ययन हेतु अमेरिका गए व Food Technology में Ph.D. की. इस दौरान अमेरिका के किसानों द्वारा दैनिक जीवन में विज्ञान एवं तकनीकी के उपयोग से वे अत्यंत प्रभावित हुए. Engineering Science Department के विभागाध्यक्ष पद से वर्ष 1982 में स्वैच्छिक निवृत्ति लेकर स्वयं के स्वप्नों एवं संकल्पों को मूर्तरूप प्रदान करने हेतु 'विज्ञान आश्रम' की स्थापना पुणे के समीप पाबल गाँव में की. विज्ञान आश्रम के 'मूल तकनीकी परिचय' कार्यक्रम को 4 राज्यों के 122 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों द्वारा अंगीकार किया जा चुका है.

वर्ष 1983 में स्थापित विज्ञान आश्रम Indian Institute of Education, पुणे से सहबद्ध है जो संपूर्णतः उन ग्रामीणों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने हेतु कृतसंकल्पित है जिन्होंने विद्यालयी शिक्षण अधूरा छोड़ दिया व जिनके जीवन में प्रकाश की किरणें लुप्तप्रायः हो गयी हैं. ग्रामीण क्षेत्र के सम्पूर्ण कौशल विकास के अभिगम के साथ उनके जीवन को उन्नत करने के उद्देश्य से कीमत प्रभावी तकनीक (Cost Effective Technology) आधारित रचनात्मक व्यावसायिकता पर लक्ष्य किया जाता है.

जब दुनिया नव तकनीकी आधारित अविष्कारों हेतु दौड़ लगा रही थी, उस समय 'ग्रामीण तकनीकी प्रवर्तक' डॉ. कालबाग संकल्प एवं धेर्य से ग्रामीण जीवन को उन्नत करने हेतु कार्यरत थे. उनका अटूट विश्वास था कि मात्र तकनीकी के क्रमिक विकास से ग्रामीण जीवन को उन्नत किया जा सकता है.

अल्पसंख्यक सूचनाएँ, गतिविधियाँ एवं समाचार

महाराष्ट्र राज्य सरकार अल्पसंख्यकों को दे रही है विशेष सुरक्षा

भारतीय संविधान के द्वारा सभी नागरिकों को सामान सुरक्षा प्रदान करने का प्रावधान है. किन्तु अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा हेतु संविधान में विशेष प्रावधान किये गए हैं.

अल्पसंख्यक समुदायों के साथ होने वाले अत्याचारों या अपराधों को रोकने के उद्देश्य से महाराष्ट्र राज्य सरकार ने 18 दिसंबर, 2015 को "अल्पसंख्यक समाज (अत्याचार प्रतिबन्ध) अधिनियम 2015" पारित किया है. महाराष्ट्र राज्य में अल्पसंख्यक समुदायों के व्यक्तियों या धर्मस्थलों पर हमलों, अपराधों एवं अत्याचारों के बढ़ते प्रमाण, संपत्तियों के नुकसान आदि के मद्देनज़र उन्हें सम्पूर्ण न्याय देने के उद्देश्य से भारतीय दण्ड संहिता में पायी गयी खामियों को दूर करने हेतु, यह अधिनियम लाया गया है.

इस अधिनियम में अल्पसंख्यक समुदाय के ऊपर होने वाले अत्याचारों एवं अपराधों को रोकने हेतु जिलास्तरीय विशेष अदालतों के गठन व विशेष अधिवक्ता की नियुक्ति के प्रावधान है. अल्पसंख्यकों के विरुद्ध किये अत्याचारों जैसे संपत्ति पर जबरन कब्ज़ा करना या नुकसान पहुँचाना, झूठा केस या कानूनी कार्यवाही करना, जबरजस्ती करना, सार्वजनिकरूप से अपमानित करना, महिला उत्पीड़न, बहुसंख्यक संस्थाओं में प्रवेश देने से मना करना आदि में 6 माह से मृत्यु दण्ड की सजा के प्रावधान इस अधिनियम में किये गए हैं.

छात्रवृत्ति आवेदन से पूर्व इतना सुनिश्चित करें

प्रधान मंत्री के 15 सूत्रीय कार्यक्रम के तहत प्रतिवर्ष की भाँति शैक्षणिक वर्ष 2016-17 हेतु विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं में छात्रवृत्ति आवेदन की प्रक्रियाएं साधारण तौर पर मई माह से प्रारम्भ होती हैं. सभी स्कूल/कॉलेज जिनमें अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र/छात्राएं अध्ययनरत है, अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाओं में उनका पंजीयन आवश्यक है. पंजीयन नहीं होने की स्थिति में स्कूल/कॉलेज का नाम ऑन-लाईन आवेदन के समय सूची (Drop Menu) में न हो, जिसे विद्यार्थी को टिक करना है, तो ऐसी स्थिति में आवेदन करना संभव नहीं हो सकेगा.

एसे सभी विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावक जिनका इन छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन करने का प्रथम अवसर है, यह सुनिश्चित करें कि उनके स्कूल/कॉलेज ने आवश्यक पंजीयन(Registration) करा लिया है. यह जानने हेतु ऑन-लाईन व्यवस्था उपलब्ध है. National Scholarship Portal का भ्रमण कर 'FIND SCHOOL/COLLEGE' click करें. Search करने हेतु दो विकल्प हैं. प्रथम Search by location जिसमें विद्यार्थी के राज्य, जिल्हा व् नगर/शहर का विवरण भरकर व द्वितीय Search by Institution code द्वारा जो सम्बद्ध शिक्षण संस्थान से प्राप्त करें.

यदि शिक्षण संस्थान इन योजनाओं में पंजीकृत नहीं है तो प्रधानाचार्य से मिलकर पंजीयन की प्रक्रिया पूर्ण करने हेतु प्रार्थना करें. पंजीयन की प्रक्रिया भी शिक्षण संस्थान द्वारा National Scholarship Portal पर ही पूर्ण करनी है जो अत्यंत ही सरल है.

जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार हेतु कर्नाटक सरकार की योजना

जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार, नवीनीकरण या मरम्मत हेतु कर्नाटक राज्य सरकार के आदेश क्रमांक MWD-174 MDS 2015 दिनांक 23.9.15 द्वारा नवीन योजना प्रारम्भ करने का आदेश जारी किया है, जिसमें योजना लागत का 50% या अधिकतम रू. 10 lacs आर्थिक सहायता के रूप में दिया जाएगा. इसमें वे ही मंदिर आर्थिक सहायता हेतु पात्रता रखेंगे जो पंजीकृत (Registered) संस्थान हैं व उनका प्रबंधन जैन समुदाय के द्वारा होता है व जीर्णोद्धार का अंदाज़-पत्र (Estimate) अधिकृत इंजीनियर से सत्यापित करवाया हो.

मंदिरों के ट्रस्टीगण जीर्णोद्धार हेतु आर्थिक सहायता प्राप्त करने निर्धारित प्रपत्र 1 में संस्था के पंजीयन प्रमाण-पत्र या तहसीलदार द्वारा मंदिर के अस्तित्व (Existence) का प्रमाण-पत्र, ट्रस्ट/सोसायटी की गत वर्ष की ऑडिट रिपोर्ट, मरम्मत का अंदाज़-पत्र (Estimate), भूमि जिस पर मंदिर का निर्माण हुआ है के सरकारी लेण्ड रेकॉर्ड की प्रति, जिला अधिकारी की रिपोर्ट, मंदिर के फोटो व ट्रस्ट बोर्ड द्वारा जीर्णोद्धार हेतु पारित प्रस्ताव की प्रति सहित, जिला अल्पसंख्यक अधिकारी को करें। अधिक जानकारी हेतु हमें BJS Helpdesk पर संपर्क करें.

अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजना मे आवेदन पत्र निमंत्रित

कक्षा 12वीं उत्तीर्ण कर कला, वाणिज्य एवं विज्ञान प्रवाह के स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों मे अध्ययनरत महाराष्ट्र राज्य के निवासी अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को रू. 5,000 की राशि छात्रवृत्ति स्वरूप प्रतिवर्ष प्रदान की जाती है। विद्यार्थी आवेदन पत्र www.dhepune.gov.in से डाऊन-लोड करें या शिक्षण संस्थान से प्राप्त करें। नवीन (Fresh) एवं नवीनीकरण (Renewal) दोनों आवेदन करने की तिथि 10 अप्रेल, 2016 तक खुली हैं। विद्यार्थी आवेदन पत्र संबद्ध शिक्षण संस्थान मे मांगे गए सभी दस्तावेज़ों सहित जमा कराना होगा। योजना के नियमों की जानकारी हेतु www.dhepune.gov.in का भ्रमण करें या हमें BJS Helpdesk पर संपर्क करें.

राष्ट्रस्तरीय अल्पसंख्यक लाभ जनजागृति अभियान

केंद्र सरकार द्वारा जनवरी, 2014 में जैन समाज को धार्मिक अल्पसंख्यक अधिसूचित किया गया. भारतीय जैन संघटना द्वारा विभिन्न राज्यों से 50 व्यक्तियों को प्रशिक्षित कर मार्च 2014 से राष्ट्रस्तरीय अल्पसंख्यक लाभ जनजागृति अभियान चलाया जा रहा है जिसका उद्देश्य अल्पसंख्यक योजनाओं, लाभों एवं लाभ प्राप्त करने के तरीकों संबंधी जानकारी जैन समाज के प्रत्येक परिवार तक पहुंचाना हैं. गत दो वर्षों से चलाये जा रहे इस अभियान को अधिक सघन बनाने हेतु 24 अप्रेल, 2016 को पुणे के वाघोली स्थित प्रशिक्षण केंद्र में वर्तमान प्रशिक्षकों को योजनाओं एवं नियमों में आए बदलाव पर पुनर्प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा.साथ ही सभी राज्यों से इस अभियान से जुडने के इच्छुक महानुभावों को भी आमंत्रित किया गया है ताकि नए प्रशिक्षक तैयार कर निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके.

Matrimonial Meets

12 June 2016
Educated Parichay Sammelan, Secundrabad
Last date for registration: 20th May 2016
Contact: Shri. P Ghevarchand Jain 94406 68868

17 July 2016
Highly Educated Matrimonial Get-together, Indore
Last date for registration: 5th July 2016
Contact: Shri. Dilip Doshi 9406609998

19 June 2016
Highly Educated Parichay Sammelan, Pune
Last date for registration: 20th May 2016
Contact: Shri. Shripal Lalwani 98239 77472

14 August 2016
Highly Educated Matrimonial Get-together Chennai
Last date for registration: 31st July 2016
Contact: Shri. Rajendra Duggad 94440 40679

3 July 2016
Remarriage Matrimonial Get-together, Pune
Last date for registration: 20th June 2016
Contact: Shri. Shashikant Munot 94204 77052

15 August 2016
Highly Educated Matrimonial Get-together Bangalore
Last date for registration: 31st July 2016
Contact: Shri. Sureshkumar Dhoka 93410 66908

RNI No.-MAHBIL/2016/66409

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana
Level IV, Muttha Towers, Loop Road,
Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel. : 020 4120 0600, 4128 0011, 4128 0012
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org Facebook : www.facebook.com/BJSIndia

मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, ४२७, गुलटेकड़ी, पुणे – ४११०३७ से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – ४११००६ से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (०२०) ४१२००६००
Rs. 10/- Life Subscription